श्रावण मास, कृष्ण पक्ष 1 वर्ष, अंक 39, पृष्ठ 4, मूल्य 1.00

अखण्ड भारत सन्देश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज सोमवार,14 सितम्बर, 2020

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान की एक अनुपम भेंट

उत्तर प्रदेश में आसान नहीं होगी नई सरकारी नौकरी, पांच वर्ष बाद ही होगी मौलिक नियुक्ति

लखनऊ, जेएनएन। सरकारी नौकरी पाकर आराम तलबी करने वालों को अब खतरा है। योगी आदित्यनाथ सरकार ऐसे नियम ला रही है, जिससे कि सरकारी नौकरी प्राप्त करने वालों में आराम तलबी की आदत कम से कम पांच वर्ष तक तो नहीं ही लगेगी। प्रदेश में अब सरकारी नौकरी पाने वालों को पांच वर्ष बाद भी मौलिक रूप से नियुक्ति देने की तैयारी की जा रही है। योगी आदित्यनाथ सरकार अब सरकारी नौकरी में बड़े बदलाव की तैयारी में हैं। उत्तर प्रदेश में अब नई नौकरी पाने वालों की पांच वर्ष तक संविदा पर तैनाती होगी। इन पांच वर्ष के दौरान भी हर वर्ष में छह-छह महीने में उनका मूल्यांकन होगा। उसमें भी हर बार 60 प्रतिशत अंक लाना यानी फर्स्ट डिवीजन में पास होगा बेहद जरूरी होगा। प्रदेश सरकार की अब प्रस्तावित नई व्यवस्था के तहत पांच वर्ष बाद ही मौलिक नियुक्ति की जाएगी। तय फामूर्ले पर इनका छमाही मूल्यांकन होगा। इसमें भी प्रति वर्ष 60 प्रतिशत से कम अंक पाने वाले सेवा से बाहर होते रहेंगे।

समूह 'ख' व 'ग' की भर्तियों में पांच वर्ष तक संविदा पर तैनाती

प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार सरकारी नौकरियों में नई भर्ती को लेकर बड़े बदलाव की तैयारी में है। इसके तहत समूह 'ख' व 'ग' की भर्तियों में चयन के बाद पांच वर्ष तक संविदा कर्मचारी के तौर पर काम करना होगा। इस दौरान हर छह माह में कर्मचारी का मूल्यांकन किया जाएगा और वर्ष में 60 फीसदी से कम अंक पाने वाले सेवा से बाहर हो जाएंगे। लिहाजा पांच वर्ष बाद उन्हीं कर्मचारी को नियमित सेवा में रखा जाएगा जिन्हें 60 प्रतिशत अंक मिलेंगे। इस दौरान कर्मचारियों को नियमित सेवकों की तरह मिलने वाले अनुमन्य सेवा संबंधी लाभ नहीं मिलेंगे।

वरिष्ठ अफसरों की निगरानी में कार्य

प्रदेश में नई नौकरी कि मौजूदा व्यवस्था में अलग-अलग भर्ती प्रक्रिया में चयनित कर्मचारियों को एक या दो वर्ष के प्रोबेशन पर नियुक्ति दी जाती है। इस दौरान कर्मचारी को नियमित कर्मी की तरह वेतन व अन्य लाभ देते हैं। एक या दो वर्षों के प्रोबेशन अवधि के दौरान वे वरिष्ठ अफसरों की निगरानी में कार्य करते हैं। इसके बाद इन्हें नियमित किया जाता है, लेकिन प्रस्तावित नई व्यवस्था के तहत पांच वर्ष बाद ही मौलिक नियुक्ति की जाएगी। नई व्यवस्था में तय फामूर्ले पर इनका छमाही मूल्यांकन होगा। इसमें प्रतिवर्ष 60 प्रतिशत से कम अंक पाने वाले सेवा से बाहर होते रहेंगे। जो पांच वर्ष की सेवा तय शर्तों के साथ पूरी कर सकेंगे, उन्हें मौलिक नियुक्ति दी जाएगी।

प्रस्ताव को जल्द कैबिनेट के समक्ष लाने की तैयारी

प्रदेश में सरकारी नौकरी को लेकर नियुक्ति-कार्मिक विभाग इस प्रस्ताव को जल्द कैबिनेट के समक्ष लाने की तैयारी कर रहा है। हर विभाग से सुझाव मांगे जा रहे हैं। सभी विभागों से सुझाव लेने के बाद इसे कैबिनेट में लाया जा सकता है। इसके पीछे का तर्क यह है कि इस व्यवस्था से कर्मचारियों की दक्षता बढ़ेगी। इसके साथ ही नैतिकता देशभक्ति और कर्तव्यपरायणता के मूल्यों का विकास होगा। इतना ही नहीं सरकार पर वेतन का खर्च भी कम होगा।

डीजीसीए ने कहा, उड़ान के दौरान फोटो लेने और वीडियो बनाने पर रोक नहीं

नई दिल्ली, पीटीआइ। नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने रविवार को स्पष्ट किया कि उड़ान के दौरान विमान में यात्रियों के फोटो खींचने या वीडियो बनाने पर कोई रोक नहीं है। यात्री ऐसे किसी उपकरण से किसी तरह की रिकॉर्डिंग नहीं कर सकते, जिससे वहां हलचल पैदा हो, उड़ान संचालन में किसी तरह की बाधा पहुंचे, सुरक्षा मानकों या क्रू मेंबर द्वारा प्रतिबंधित नियमों का उल्लंघन हो। विमानन नियामक ने शनिवार को कहा था कि यदि उड़ान के दौरान विमान के भीतर कोई व्यक्ति फोटो खींचते पाया जाता है तो उस विमान की सेवा को दो हफ्ते के लिए निलंबित कर दिया जाएगा। दरअसल, दो दिन पहले कंगना रनोट की मुंबई यात्रा के दौरान इंडिगो की उड़ान में अपरा-तफरी मच गई थी। इसके बाद ही डीजीसीए ने यह चेतावनी जारी की थी। अपने नए आदेश में डीजीसीए ने कहा है कि अगर सुरक्षा मानकों और तय दिशानिर्देशों का कोई व्यक्ति उल्लंघन करता है तो उसके खिलाफ कार्रवाई की जा सकती है। यही नहीं डीजीसीए ने चंडीगढ़-मुंबई फ्लाइट में पत्रकारों द्वारा कथित रूप से सुरक्षा और शारीरिक दूरी के नियमों का उल्लंघन किए जाने पर इंडिगो से उचित कार्रवाई करने को भी कहा था।

सुप्रीम कोर्ट से 77 साल की महिला ने लगाई गुहार

कहा- कानून की पढ़ाई में आड़े नहीं आए उम्र

नई दिल्ली, पीटीआइ। कानून की पढ़ाई करने के लिए 77 वर्षीय महिला ने बार काउंसिल ऑफ इंडिया (बीसीआइ) के नियमों को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी है। उन्होंने कानून की पढ़ाई के लिए कालेज में एडमिशन के लिए अधिकतम आयु सीमा 30 वर्ष को खत्म करने की मांग की है। उन्होंने बीसीआइ के नियमों को चुनौती देने वाली पहले से लंबित याचिका पर सुप्रीम कोर्ट से दखल देने की अपील की है। उत्तर प्रदेश के साहिबाबाद की रहने वाली 77 वर्षीय राजकुमारी त्यागी को जब तीन साल के एलएलबी के कोर्स के लिए एडमिशन देने से इन्कार कर दिया गया तो उन्होंने एक याचिका दायर की है। बीसीआइ के नियमों के मुताबिक एलएलबी के पांच साल के कोर्स के लिए अधिकतम आयुसीमा 20 साल है, जबकि तीन साल के एलएलबी कोर्स के लिए अधिकतम आयु सीमा 30 साल है। याचिका में कहा गया है कि अपने पति के देहांत के बाद उनकी अचल संपत्ति को संभालने के लिए उनकी विधि की शिक्षा में रुचि बढ़ गई। उन्हें उस दौरान कई कानूनी अड़चनों का सामना करना पड़ा और उन्हें हर पड़ाव पर एक वकील की जरूरत महसूस हुई। फिर चाहे वह वसीयत से संबंधित कानून हों या फिर दस्तावेजों के जरिये पहचान साबित करना हो। याचिका में यह भी दावा किया गया है कि बीसीआइ के नए नियमों से संविधान के अनुच्छेद 14 (समानता के अधिकार) का उल्लंघन होता है। 19(1) के तहत किसी भी व्यवसाय को करने के अधिकार में बाधा और 21 के जीवन और निजी स्वतंत्रता के अधिकार का उल्लंघन होता है। लिहाजा, याचिकाकर्ता त्यागी ने अदालत से आग्रह किया कि उन्हें अनुच्छेद-21 के तहत किसी भी संस्थान या अपनी पसंद के कालेज से कानून की शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार है।

आतंकियों के संपर्क सूत्र को सेना बना रही है हथियार कांटेक्ट ट्रेसिंग के जरिए हो रही आतंक पर चोट

जम्मू, जेएनएन। भारतीय सेना कश्मीर में परिजनों को विश्वास में लेकर सुनिश्चित कर रही है कि युवाओं को राह भटकने से रोका जाए। कश्मीर की सुरक्षा का जिम्मा संभालने वाली सेना की 15 कोर के कोर कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल बीएस राजू ने माना है कि यह रणनीति काफी सफल रही है। सेना कांटेक्ट ट्रेसिंग (संपर्क सूत्र) मुहिम के तहत कश्मीर में सक्रिय और मारे गए आतंकवादियों के परिजनों के बारे में सारी जानकारी जुटाकर उन तक पहुंच रही है। इस दौरान परिजनों को समझाया जा रहा है कि वे युवाओं को समझाएं कि जोश में आकर वे बंदूक उठाने की गलती न करें। श्रीनगर में रविवार को कोर कमांडर ने कहा कि परिवारों की काउंसलिंग युवाओं को राह भटकने से रोकने में बहुत अहमियत रखती है। उन परिवारों तक पहुंचने की पूरी कोशिश हो रही है जिनके बच्चे गुमराह हो सकते हैं।

बता दें कि कोर कमांडर ने कश्मीर में राष्ट्रीय राइफल्स की विक्टर फोर्स के जीओसी के रूप में कांटेक्ट ट्रेसिंग के जरिये कई युवाओं को हथियार उठाने से रोका था। सेना की विक्टर फोर्स कश्मीर के

पुलवामा, अनंतनाग, शोपियां और कुलगाम में आतंकवाद के खात्मे के लिए कार्य कर रही है। कांटेक्ट ट्रेसिंग का इस्तेमाल कोरोना संक्रमितों की पहचान करने के लिए भी किया जा रहा है। कोर कमांडर का कहना है कि इस मुहिम के तहत सेना कई युवाओं को आतंकी बनने से रोकने में सफल रही है। ऐसे युवाओं की संख्या न बताते हुए कोर कमांडर ने स्पष्ट किया कि बंदूक उठाने वाले युवाओं की संख्या काफी कम है। हमारी कोशिश है कि युवाओं के दिमाग से आतंकवादी बनने का विचार निकाल दिया जाए।

जनरल राजू ने कहा कि गुमराह युवाओं को राह पर लाने में परिजनों, दोस्तों की अहम भूमिका है। समाज का सहयोग युवाओं को हिंसा की राह छोड़ने के लिए प्रेरित कर सकता है। कई परिजन संदेश जारी कर गुमराह युवाओं को वापस ले आते हैं। ऐसी ही एक कोशिश के बाद युवा माजिद ने हथियार छोड़ दिए थे। उसे विश्वास दिलाया था कि सामान्य जीवन जीने में उसे पूरा सहयोग दिया जाएगा। आज वह जम्मू-कश्मीर के बाहर अंतिम वर्ष की पढ़ाई कर रहा है। पुलिस के अनुसार इस वर्ष कश्मीरी के विभिन्न जिलों से 80 के करीब युवा आतंकवादी बने हैं। उन्हें वापस लाने के लिए सेना के साथ पुलिस की ओर से भी कार्रवाई की जा रही है।

उत्तर प्रदेश में सरकारी नौकरियों में संविदा के प्रस्ताव पर घिरी योगी सरकार, विपक्ष ने खोला मोर्चा

लखनऊ, जेएनएन। उत्तर प्रदेश में सरकारी नौकरी की शुरूआत में पांच वर्ष की संविदा के सरकार के प्रस्ताव ने सूबे की सियासत में हलचल मचा दी है। यूं भी बेरोजगार के विषय को लगातार उठा रहे विपक्ष ने इस मुद्दे को हाथों-हाथ लपका है। प्रदेश सरकार के इस प्रस्ताव को युवा विरोधी करार देते हुए सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने 2022 में सबक सिखाने की चेतावनी दे डाली है तो कांग्रेस महासचिव व उत्तर प्रदेश प्रभारी प्रियंका वाड्रा ने दो टूक कहा है कि युवाओं का आत्मसम्मान नहीं छीनने देंगे। हालांकि राज्य के मुख्य सचिव आरके तिवारी ने स्पष्ट किया है कि सरकार के स्तर पर सतत सुधारात्मक विचार चलते रहते हैं। सरकारी नौकरी में संविदा को लेकर भी अभी कोई निर्णय नहीं हुआ है। जब भी निर्णय किया जाएगा, वह जनहित, युवाओं का हित और प्रदेश का हित देखते हुए किया जाएगा।

यूपी सरकार के प्रस्ताव पर सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा केवल अपने राजनीतिक विस्तार और सत्ता पर एकाधिकार को ही विकास मानती है। यही कारण है कि प्रदेश में विकास कार्य

अवरुद्ध हैं और युवाओं के प्रति तो उसका रवैया शुरू से ही संवेदनाशून्य रहा है। बयान जारी कर उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा की गलत नीतियों के चलते प्रदेश पिछड़ता ही जा रहा है। परेशान हाल नौजवान आत्महत्या कर रहे हैं। समूह ख व ग की भर्ती प्रक्रिया में बदलाव किया जा रहा है, जिससे सरकारी नौकरियों में भी ठेका प्रथा लागू हो जाएगी।

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि परीक्षा से आए समूह ख व ग के कर्मचारियों को पहले पांच वर्ष तक संविदा पर रखा जाएगा। पांच वर्ष की कठिन संविदा प्रक्रिया में छंटनी से जब बच पाएंगे, तभी पक्की नौकरी मिल पाएगी। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार का इरादा है कि भविष्य में सुरक्षित नौकरी किसी को न मिले। कर्मचारी को संविदा काल में पहले सहायक पदनाम से नियुक्ति मिलेगी। दक्षता परीक्षा में 60 फीसद से कम अंक आने पर सेवा समाप्त हो जाएगी। इस तरह संविदा काल का कर्मचारी पूरी तरह बंधुआ बनकर रहेगा।

प्रियंका बोलीं, नहीं छीनने देंगे युवाओं का आत्मसम्मान : वहीं, कांग्रेस महासचिव प्रियंका ने ट्वीट किया कि युवा नौकरी की मांग करते हैं और यूपी सरकार भर्तियों को पांच साल के लिए संविदा पर रखने का प्रस्ताव ला देती है। ये जले पर नमक छिड़ककर युवाओं को चुनौती दी जा रही है। गुजरात में यही फिक्स पे सिस्टम है। वर्षों सैलरी नहीं बढ़ती, परमानेंट नहीं करते। युवाओं का आत्मसम्मान नहीं छीनने देंगे। वहीं, कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष अजय कुमार लल्लू ने बयान जारी कर कहा कि देश और प्रदेश में भयंकर रूप से बढ़ती बेरोजगारी और लगातार गिरती अर्थव्यवस्था से युवाओं का भविष्य खतरे में है। ऐसे समय में प्रदेश की योगी सरकार का नई नियुक्तियों को पहले पांच वर्ष संविदा पर रखे जाने का प्रस्ताव लाया जाना छात्र-छात्राओं और युवाओं के साथ ऐतिहासिक अन्याय जैसा कृत्य है।

पांच साल संविदा, फिर पक्की होगी सरकारी नौकरी

बता दें कि राज्य सरकार सभी सरकारी विभागों में समूह 'ख' और 'ग' के पदों की भर्ती प्रक्रिया में व्यापक बदलाव करते हुए चयन के बाद पहले पांच वर्षों के दौरान कर्मचारियों को संविदा के आधार पर नियुक्त करने पर विचार कर रही है। पांच वर्ष की संविदा की अवधि के दौरान ऐसे कार्मिकों को समूह 'ख' और 'ग' के संबंधित पद का राज्य सरकार की ओर से निर्धारित नियत वेतन दिया जाएगा। इस अवधि में उन्हें नियमित सरकारी कार्मिकों को मिलने वाले सेवा संबंधी लाभ नहीं दिए जाएंगे। सिर्फ सरकारी कार्य के लिए की जाने वाली यात्रा के लिए यात्रा व अन्य संबंधित भत्ते दिए जाएंगे। गौरतलब है कि प्रदेश की सरकारी सेवाओं में समूह 'ख' के 58,859 और समूह 'ग' के 8,17,613 पद हैं।

प्रदर्शन और दक्षता का प्रत्येक छमाही में नियमित मूल्यांकन

राज्य सरकार के प्रस्ताव के अनुसार, संविदा की अवधि के दौरान चयनित कार्मिक के प्रदर्शन और दक्षता का प्रत्येक छमाही में नियमित मूल्यांकन होगा। मूल्यांकन में प्रतिवर्ष 60 फीसद से कम अंक पाने वाले कार्मिक सेवा से बाहर कर दिए जाएंगे। पांच साल की सेवा अवधि को शर्तों के अनुसार पूरा करने वालों को ही संबंधित सेवा नियमावली के आधार पर मौलिक नियुक्ति दी जाएगी। प्रस्तावित व्यवस्था को सेवाकाल के दौरान मृत कार्मिकों के आश्रितों की भर्ती नियमावली पर भी लागू करने का इरादा है। पीसीएस, पीसीएस-जे व पीपीएस सेवा के पदों को प्रस्तावित व्यवस्था के दायरे से बाहर रखने की मंशा है। सरकारी नौकरियों में पहले से चल रही चयन प्रक्रिया को भी इसके दायरे में लाने का इरादा है।

अब तक 37 लाख से अधिक लोगों ने महामारी को दी मात

नई दिल्ली, जेएनएन। देश में कोरोना वायरस की रफ्तार पर रोक नहीं लग रही है। पिछले पांच दिनों से लगातार 95 हजार के आस पास नए मामले मिल रहे हैं। संक्रमितों का आंकड़ा 50 लाख के करीब पहुंचने जा रहा है। हालांकि, सुकून की बात यह है कि प्रतिदिन बड़ी संख्या में मरीज ठीक भी हो रही हैं। महामारी को मात देने वाले मरीजों का आंकड़ा 37 लाख को पार कर गया है। हालांकि, कोरोना की वजह से होने वाली मौतों की संख्या भी पिछले कुछ दिनों से एक हजार से अधिक बनी हुई है। मृतकों का आंकड़ा 80 हजार के करीब पहुंच गया है।

समाचार एजेंसियों की तरफ से रविवार रात नौ बजे तक मिली देश के विभिन्न

भागों से मिली सूचनाओं के मुताबिक शनिवार देर रात से अब तक 95,371 नए मामले सामने आए हैं और मरीजों की संख्या 48.36 लाख से अधिक हो गया है। इस दौरान 74,460 मरीजों को विभिन्न अस्पतालों से छुट्टी मिली है और 1,153 लोगों की मौत भी हुई है। इनको मिलाकर कोरोना से ठीक हुए मरीजों की संख्या 37.63 लाख से अधिक हो गई है और मृतकों का आंकड़ा 79,644 पर पहुंच गया है। सक्रिय मामले 9.93 लाख हैं।

महाराष्ट्र में कोरोना महामारी के चलते हालात गंभीर ही बने हुए हैं। पिछले कई दिनों से राज्य में रोज 20 हजार से अधिक नए मामले सामने आ रहे हैं। रविवार को भी 22,543 नए मामले मिले और संक्रमितों का कुल आंकड़ा 10.60 लाख से अधिक हो गया। बीते 24 घंटों के दौरान राज्य में 416 लोगों की जान भी गई है और मरने वालों की संख्या 30 हजार के करीब पहुंच गई है। यह संख्या देश में कोरोना के चलते हुए कुल मौतों की करीब 40 फीसद है। गुजरात में 1,326 नए मामलों के साथ संक्रमितों का आंकड़ा 1.13 लाख को पार कर गया है।

दक्षिण भारत में आंध्र प्रदेश के बाद अब कर्नाटक कोरोना का केंद्र बनते जा रहा है। पिछले कुछ दिनों से राज्य में लगातार नौ हजार से अधिक नए केस मिल रहे हैं। अबकी बार 9,894 नए मामले मिले हैं जो राज्य में एक दिन में सामने आए नए मामलों की अब तक सबसे बड़ी संख्या है। इसके साथ ही संक्रमितों की संख्या 4.60 लाख के करीब पहुंच गई है। 104 मौतों के साथ मृतकों का आंकड़ा भी 72 सौ से अधिक हो गया है। आंध्र प्रदेश में 9,536 नए केस मिले है और 66 लोगों की जान गई है। राज्य में अब तक 5.67 लाख मरीज मिले हैं और 4,912 लोगों की जान जा चुकी है। केरल में 3,139 मामलों के साथ रोगियों की संख्या 1.08 लाख से अधिक हो गई है।

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में लगातार पांचवें दिन चार हजार से अधिक नए केस मिले। 4235 नए मामलों के साथ संक्रमितों का आंकड़ा 2.18 लाख को पार कर गया। 29 लोगों की जान गई है। अब तक 4,744 लोगों की जान जा चुकी है। उत्तर प्रदेश में 6,239 नए मामले मिले हैं और 80 लोगों की मौत हुई है। राज्य में अब तक कुल मामले 3.12 लाख से अधिक हो गई हैं और 4,429 लोगों की जान भी जा चुकी है। ओडिशा में 3,913 नए मामलों के साथ संक्रमितों का आंकड़ा 1.50 लाख के पार पहुंच गया है। मृतकों की संख्या 625 हो गई है।

जम्मू कश्मीर के पुलवामा में आतंकियों और सुरक्षाबलों के बीच मुठभेड़, दोनों ओर से हुई गोलीबारी

पुलवामा, एएनआइ। जम्मू-कश्मीर में पुलवामा के परगाम इलाके में रविवार शाम सुरक्षाबलों और आतंकियों के बीच मुठभेड़ हुई। सुरक्षाबलों को इस इलाके में आतंकियों के छिपे होने की आशंका जताई गई थी, जिसके बाद से जवानों ने सर्च ऑपरेशन जारी कर मोर्चा संभाल लिया। दोनों ओर से ही गोलीबारी की गई।

बता दें कि सुरक्षाबलों ने गुरुवार को आतंकवाद पर करारा प्रहार करते हुए पाकिस्तान की साजिशों को नाकाम बना दिया था। सेना ने उत्तरी कश्मीर में एलओसी के साथ सटे उड़ी सेक्टर में गुलाम कश्मीर से जैश-ए-मोहम्मद के लिए आई हथियारों की एक खेप बरामद की थी। इसमें एम-16 जैसी घातक एसाल्ट राइफलें भी शामिल थीं। इसके अलावा पुलिस ने उत्तरी कश्मीर के कुपवाड़ा में नए आतंकियों की भर्ती की साजिश रच रहे जैश के दो आतंकियों को गिरफ्तार किया था।

पुलिस को पता चला था कि नए आतंकियों की भर्ती व सीमा पार से आने वाले जैश के आतंकियों के लिए नेटवर्क तैयार करने की साजिश के लिए कुछ आतंकी कुपवाड़ा आने वाले हैं। इसके आधार पर पुलिस ने सेना के साथ कुपवाड़ा की तरफ आने जाने वाले रास्तों पर नाके लगाए। द्रगमुला में खाद्य निगम के भंडार गृह के पास नाके के दौरान जवानों ने एक कार जेके05-0872 को आते देख रुकने का संकेत किया। नाका देखते ही कार चालक व उसके साथ बैठे एक युवक ने भागने का प्रयास किया, लेकिन नाकाम रहा। सुरक्षाबलों ने उन्हें दबोच लिया। वहीं, इसके पहले पिछले हफ्ते पाकिस्तान ने नियंत्रण रेखा पर उत्तरी कश्मीर के नौगाम सेक्टर (कुपवाड़ा) और पुंछ जिले के शाहपुर किरनी, कसबा सेक्टर में भारी गोलीबारी की थी। नौगाम में भारतीय सेना का एक जवान शहीद हुआ था। जबकि दो अन्य सैन्यकर्मी घायल हुए थे।

गृह मंत्री अमित शाह फिर एम्स में हुए भर्ती, देर रात अचानक बिगड़ी तबीयत, सांस लेने में परेशानी

नई दिल्ली, जेएनएन। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की तबीयत अचानक बिगड़ने के कारण शनिवार देर रात को उन्हें दोबारा एम्स में भर्ती किया गया। बताया जा रहा है कि उन्हें सांस लेने में परेशानी है। पल्मोनरी व मेडिसिन विभाग के वरिष्ठ डॉक्टर उनका इलाज कर रहे हैं। शाह गत दो अगस्त को कोरोना वायरस से संक्रमित पाए गए थे। इसके बाद उन्हें गुरुग्राम के मेदांता अस्पताल में भर्ती कराया गया था। मेदांता अस्पताल में इलाज के बाद निगेटिव होने पर उनको 14 अगस्त को अस्पताल से डिस्चार्ज कर दिया गया था। कोरोना से ठीक होने के बाद 18 अगस्त को उन्हें सांस लेने में परेशानी और थकान के कारण एम्स में भर्ती किया गया था। 31 अगस्त को उन्हें एम्स से छुट्टी दे दी गई थी। उस समय एम्स ने बयान जारी कर कहा था कि वह पूरी तरह स्वस्थ हो गए हैं। लेकिन उन्हें एक बार फिर अस्पताल में भर्ती किया गया है। हालांकि इस बीच एक अच्छी खबर यह भी है कि केंद्रीय आयुष मंत्री श्रीपद नाइक को शनिवार को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। जांच रिपोर्ट के मुताबिक, गोवा से लोकसभा सदस्य नाइक कोरोना वायरस संक्रमण से मुक्त हो गए हैं। 12 अगस्त को उन्हें पणजी के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया था। एक अधिकारी ने बताया कि नाइक को अस्पताल से छुट्टी देने से पहले अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के विशेषज्ञों से सलाह ली गई थी। घर लौटने के दौरान केंद्रीय मंत्री डॉक्टरों की टीम के साथ सबसे पहले एक मंदिर में गए। उनके साथ चल रही डॉक्टरों की टीम में भारतीय चिकित्सा संघ की गोवा इकाई के पूर्व प्रमुख डॉक्टर शेखर सालकर भी शामिल थे। मंदिर में उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद किया।

रेलवे स्टेशनों के आसपास सोलर पैनल लगाकर अपनी जमीन बचाएगा रेलवे

गोरखपुर, जेएनएन। गोरखपुर और आसपास के स्टेशनों और रेल लाइनों के किनारे कोई स्थाई अतिक्रमण तो नहीं है, लेकिन भविष्य में भूमि की सुरक्षा को लेकर पूर्वोत्तर रेलवे प्रशासन की चिंता बढ़ गई है। इसके लिए वह घनी आबादी वाले स्टेशनों और उसके आसपास रेल लाइनों के किनारे खाली भूमि पर सोलर पैनल लगाने की योजना तैयार कर रहा है। रेलवे प्रशासन की पहल पर संबंधित इंजीनियरों ने खाली भूमि को चिन्हित करना शुरू कर दिया है।दरअसल, रेलवे स्टेशनों और दफ्तरों की छतों पर ही सोलर पैनल लगाए जाते रहे हैं। गोरखपुर मुख्यालय में महाप्रबंधक, परिचालन और वाणिज्य विभाग के अलावा स्टेशन की छतों पर पैनल लगाए गए हैं। लेकिन अब भवनों के छत भी लगभग फुल हो गए हैं। पैनल लगाने के लिए रेलवे के पास कोई जगह नहीं बची है। ऐसे में अब स्टेशनों के आसपास वाली भूमि ही दिख रही है। जानकारों का कहना है कि सोलर पैनल लगाने से रेलवे की भूमि के किनारे दीवार भी चल जाएगी और पैनल भी लग जाएंगे। एक तो भूमि स्थाई रूप से सुरक्षित हो जाएगी। लोग झुग्गी झोपड़ी नहीं डाल पाएंगे। सोलर पैनल से स्टेशन को बिजली भी मिलेगी। फिलहाल, इस योजना को लेकर रेलवे प्रशासन और संबंधित इंजीनियरों के बीच गहन मंथन चल रहा है। सहमति बन गई तो जल्द ही सोलर पैनल लगाने की प्रक्रिया भी शुरू हो जाएगी।

ग्रामीण अंचल

संक्षेप समाचार

आर्थिक तंगी और बदहाली के चलते युवक ने घर में फांसी लगाकर की आत्महत्या

जसरा। पचखरा गांव निवासी सुशील कुमार उर्फ नचके उम्र 28 वर्ष पुत्र राधेश्याम भारतीय किसी तरह मजदूरी आदि करके अपना वह बच्चों का पेट पाल रहा था इधर काफी दिनों से काम के अभाव में उसकी हालत बिगड़ती जा रही थीं कल रात सबके साथ खाना खाकर वह अपने कमरे में सोने चला गया। सुबह जब देर तक नहीं जागा तो मां ने उसके कमरे में जाकर आवाज लगाईमृतक। दरवाजा खुला होने पर जब उसने देखा सुशील कुमार आत्महत्या कर लिया था तो नहीं मां की चीख पुकार सुनकर घरवाले भी पहुंचे तथा मायके में गई हुई पत्नी को भी खबर दिया गया वह घटनास्थल पर जब पहुंची तो पत्नी की करुण क्रंदन से सभी लोगों की आंखें नम हो गई।

21 किलो गांजा संग दो तस्कर गिरफ्तार

घूरपुर। घूरपुर पुलिस टीम ने रविवार की भोर वाहनों की जांच के समय एक कोरोला कार को रोक उसमे से 21 किलो अवैध गांजा बरामद किया है । टीम ने कार में सवार दो गांजा तस्करों को पकड़ उनके खिलाफ केस दर्ज कर जेल भेज दिया है ।

घूरपुर थाने में पुलिस की गिरफ्त में गांजा सहित गांजा तस्कर व बरामद कार

घूरपुर एसओ भुवनेश कुमार चौबे रविवार की भोर अपनी टीम को लेकर अवैध वाहनों की जांच कर रहे थे । इसी बीच एक कोरोला कार संदिग्ध रूप में आती दिखाई दी । जिसे पुलिस ने रोकने का प्रयास किया तो कार चालक कार लेकर भागने लगा ।पुलिस टीम ने घेरकर कार को रोक लिया तो उसमें सवार दो लोग भाग निकले ।कार में मिले दो लोगों को कार सहित घूरपुर थाने ले गए।कार की तलाशी ली गई तो उसमें 21 किलो अवैध गांजा बरामद हुआ ।पुलिस ने कार को सीज करते हुए कार में मिले गांजा के तस्कर अजय सिंह निवासी सिंहपुर थाना मेजा व पुष्पेंद्र सिंह निवासी बनपुकरा थाना हंडिया के खिलाफ संगीन धाराओं में केस दर्ज कर जेल भेज दिया । पुलिस ने बताया कि रूपेंद्र सिंह निवासी बिगहिया थाना सैदाबाद व शिवेंद्र सिंह निवासी सैदाबाद मौके से फरार हो गए हैं। उनके खिलाफ भी केस दर्ज किया गया है।

खड़ी हाइड्रा में ट्रक ने मारी जोरदार टक्कर, चालक की मौत

उतरांव। सराय ममरेज क्षेत्र के खिजिरपुर गांव निवासी नीरज कुमार कुशवाहा 23 वर्ष पुत्र राम अभिलाष अपने माता-पिता के एकलौता बेटा था। महाराष्ट्र के नागपुर में हाइड्रा चालक था। जो बुधवार रात १२ बजे के करीब नागपुर में हाइड्रा खराब हो जाने से हाइड्रा खड़ी कर के उसी में ही सो गया।जानकारी के तहत भोर ४ बजे के करीब सामने से आई ट्रक भिड़ जाने से हाइड्रा में सोया नीरज की मौके पर मौत हो जाने की सूचना साथी खलाशी के जरिए घटना की जानकारी मृतक के परिजन को देते हुए स्थानीय पुलिस को दिया। मौके पर पहुंची पुलिस ने लाश को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। नागपुर में मौजूद मृतक के गांव के लोगों ने लाश लेकर शुक्रवार को घर पहुंचते ही जहां एक तरफ घर व गांव में कोहराम मच गया। वहीं दूसरी तरफ माता सावित्री एवं पत्नी निशा कुशवाहा समेत सभी परिजनों का रो रोकर बुरा हाल हो रहा है।

कुएं में किशोर का मिला शव, हत्या की आशंका

हनुमानगंज। सराय इनायत थाना क्षेत्र के फतूहां गांव निवासी, विनय श्रीवास्तव के बेटे दिब्यांश श्रीवास्तव 14 वर्ष का शव रविवार सुबह 10 बजे घरके बगल एक कुएँ में पाया गया जिससे गाँव में सनसनी फैल गई। सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पीएम के लिए भेजा। परिजनों ने हत्या की आशंका जताई है।

मृतक की फाइल फोटो

पिता विनय श्रीवास्तव उन्नाव में किसी प्राइवेट कंपनी में काम करता है । पत्नी सुनीता श्रीवास्तव अपने चार बच्चों के साथ गांव में रहती है। परिजनों के मुताबिक दिब्यांश इस वर्ष कक्षा 9वीं पास किया था। रविवार सुबह अपने बड़े पापा बृजेश श्रीवास्तव के साथ कार से दिल्ली जाने वाला था। और उसने अपना बैग भी पैक कर लिया था, शनिवार कि रात करीब एक बजे तक उसे टीवी देखते घर के लोगों ने देखा था। उसके बाद घरसे कब और कैसे निकला इसकी भनक किसी को नहीं लगी। रविवार सुबह जब दिल्ली जाने के लिए उसकी खोजबीन होने लगी तो दिब्यांश अपने कमरे में नहीं था। परिजनों ने सोचा कि सुबह रोज टहलने जाया करता था शायद टहलने गया होगा। जैसे जैसे समय बीतता गया परिजन घबराते रहे। शक होने पर लोगों ने कुएँ में रस्सी के सहारे कटिया छोड़ा जिसमें उसका स्लीपर फंसकर उपर आया। परिजनों ने उसकी स्लीपर होने की बात बताई। शव उसका काफी नीचे पानी में डूबा हुआ था। गाँव के लोगों कि मदद से उसका शव बाहर निकाला गया जिसके बाद परिजनों में कोहराम मच गया। मृत, दिब्यांश का बड़ा भाई उत्तम श्रीवास्तव ने पुलिस को इत्तफाकिया तहरीर दी है। लेकिन परिजनों ने हत्या की आशंका भी जताई है।

वहीं इंस्पेक्टर संजय कुमार द्विवेदी का कहना है कि घटनाक्रम के अनुसार मामला खुदकुशी का लग रहा है क्योंकि बाडी में कहीं चोट के निशान नहीं पाए गए। फिलहाल पीएम रिपोर्ट आने पर ही कुछ कहा जा सकता है।

भट्ठा मालिक के खिलाफ की शिकायत

करछना। थाना क्षेत्र के बस्तर हौज कटोरवा गांव में एक ईट के भट्ठा संचालक की शिकायत थाना करछना में उसके यहां कार्यरत एक मजदूर ने किया है। अन्तहिया गांव निवासी भुक्तभोगी अजय पटेल का कहना है कि वह 2011 से प्रतिमाह 6 हजार रुपए की तनख्वाह पर काम कर रहा था लेकिन 9 वर्ष काम करने के बाद केवल 62 हजार रुपए तनख्वाह के रूप में मिला है। शेष पैसा न मिलने पर वह काम पर जाना बन्द कर दिया तो भट्ठा मालिक भगवत प्रसाद व उसके दो पुत्र शनिवार रात घर पर आये और काम पर चलने का दबाव बनाने लगे जब भुक्तभोगी ने बकाया पैसा देने पर ही काम करने को कहा तो उक्त लोगो ने गाली देते हुए जान से मारने की धमकी दी। जिससे आहत अजय ने करछना थाने में तहरीर देकर जानमाल की सुरक्षा की गुहार लगायी।

सपा में ही कार्यकर्ताओं का सम्मान निहित

नव नियुक्त पदाधिकारियों के साथ सपा कार्यकर्ता

फूलपुर। समाजवादी पार्टी में ही कार्यकर्ताओं का सम्मान निहित है। पार्टी हित में संघर्ष करने वाले कार्यकर्ताओं का संघर्ष कभी जाया नही जाता। समय आने पर सपा ऐसे कार्यकर्ताओं का पार्टी में कद बढ़ाने का कार्य करती है। यह बातें रविवार को प्रतापपुर विधानसभा क्षेत्र के दरियापुर गांव में आयोजित सम्मान समारोह में सपा के नवनियुक्त पदाधिकारियों को सम्मानित करते हुए सपा के वरिष्ठ कार्यकर्ता व लोहिया वाहिनी के निवर्तमान राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य नसीरूद्दीन राईन ने कही। युवा सपा नेता सर्वेश यादव के नेतृत्व में आयोजित सम्मान समारोह के अवसर पर उपस्थित सपा की निवर्तमान जिला उपाध्यक्ष अनीता श्रीवास्तव ने कार्यकताओं से पार्टी की नीतियों पर चलते हुए सपा को मजबूती प्रदान करने की बात कही। वहीं नव नियुक्त जिला उपाध्यक्ष ने सभी का आभार ब्यक्त करते हुए कदम से कदम मिलाकर चलने की अपील की। इस मौके पर सौरभ यादव, आशुतोष तिवारी,फिरोज राईन, दिनेश यादव सहित अन्य सपा कार्यकर्ता मौजूद रहे।

लालापुर पुलिस ने किया मास्क वितरण

लालापुर। नवांगतुक एसएसपी सर्वक्षेष्ठ त्रिपाठी के कमान संभालते ही पुलिस कर्मियों में चहल कदमी बढ़ गई है। इसी क्रम में रविवार की शाम लालापुर पुलिस ने इलाके में भारी पुलिस बल के साथ पैदल गस्त किया । और जगह जगह कोविड-19 के आदेशों के पालन के क्रम में बिना मास्क के यात्रा करते हुए लोगों व बिना हेलमेड बाइक लेकर फरार्टा भर लोगों मार्क्स मार्क्स दिया गया और बिना मार्क्स के चालान काटा इस बीच राहगीरों में हड़कम्प मच गया।

लोगों को मास्क वितरित करती लालापुर पुलिस

एसओ लालापुर अमित कुमार राय अपने हमराहियों के साथ शनिवार की शाम लालापुर चौराहे से लेकर लालापुर चौराहे अमिलिया गांव तक सुरक्षा व्यवस्था को चाक चौबंद के क्रम में पैदल गस्त किया ।इस बीच बिना मास्क चल रहे लोगों के खिलाफ अभियान चलाकर चालान किया गया । पुलिस ने लालापुर तिराहे पर वाहनों की सघन जांच की ।जिसमे दर्जनों वाहनों का चालान किया गया। बिना हेलमेट के बाइक चला रहे लोगों को बिना सीट बेल्ट के भी निसाने पर लेटे हुए चालान काटा गया । इसी क्रम में लालापुर तिराहे, प्रतापपुर चौराहे पर वाहनों की सघन जांच की गई। जिसमें बिना मास्क चलने वाले व बिना हेलमेट यात्रा करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की गई। सिपाही शिवानी सिंह चौहान, हर्षिता, यस आई समीर कुमार, अभिषेक कुमार सिंह, बृजमोहन मौजूद रहे।

क्षेत्र में मोबाइल नेटवर्क हुआ ध्वस्त, किसी भी कंपनी के नेटवर्क से नही होती बात

जारी। जिले में काल ड्राफ्ट, आवाज ना आना नेट समस्या में बाधा आम बात है। इसमें ग्रमीण उपभोक्ताओं का जमकर शोषण हो रहा है। ग्राहकों की जेब पर सीधे डाका डाल रही है। मोबाइल कम्पनी एक तरफ बेहतर सेवा का प्रलोभन और प्रचार करने वाली एयरटेल, वोडाफोन, जीओ, इरठछ, कम्पनी ग्राहकों का जमकर शोषण करते दिखाई दे रही है। जबकि बेहतर सुविधा का दावा निरन्तर कर ग्राहकों के साथ खिलवाड़ कर रही हैं। जिससे क्षेत्र के उपभोक्ता बारा तहसील के जसरा ब्लॉक के अगल बगल एरिया मे, जारी क्षेत्र सहित अन्य क्षेत्रों के गावों में अधिकतर एयरटेल, वोडाफोन ,जीओ, इरठछ सिम के उपभोगता नेटवर्किंग समस्या से परेशान हैं। काल ड्राप्ट,बात करने के दौरान अचानक काल कट जाना,जल्द काल ना लगना आम बात बन गई। आए दिन यह समस्या निरन्तर उत्पन्न हो रही है। 4ॠके नाम पर ग्राहको का शोषण महंगे नेट रिचार्ज ऊपर से जरूरत पर समुचित सिग्नल ही न होना । शिकायत पर भी कोई फायदा नही जबकि कम्पनी बेहतर सेवा प्रदाता का राग हमेशा अलाप कर रही है। जिससे आजीज आकर बहुत उपभोक्ता परेशान है एक नेटवर्क बदल कर दुसरी कम्पनी में जा रहे हैं। पर उसमें भी वही देखने को मिलता है समस्या जैसे की तैसे बनी रहने के कारण अति आवश्यक काम पर फोन लगना मुश्किल हो जाता है,एक तरफ धन हानि ऊपर से जरूरत पर काम में बाधा,उपभोक्ता दो तरफा मार झेल रहे हैं।

प्राइमरी स्कूल का ताला तोड़कर चोरों ने उड़ाए हजारों रुपए के उपकरण

नैनी। औद्योगिक क्षेत्र के मसिका गांव में चोरों के एक गिरोह ने एक बार फिर चोरी की वारदात को अंजाम देते हुए एक बंद स्कूल को निशाना बनाते हुए हजारों रुपए के उपकरण चोरी कर फरार हो गए।

जानकारी के मुताबिक औद्योगिक क्षेत्र के मसिका गांव में सरकारी प्राइमरी पाठशाला स्थापित है और लॉक डाउन की वजह से विद्यालय बंद चल रहा है। चोर बीती रात मौका पाते ही अंदर दाखिल हो गए और कई कमरों का ताला तोड़कर वहां पर लगे दो पंखे, मिड डे मील के लिए रखे बर्तन, पेट्रो गैस समेत कई अन्य उपकरणों पर हाथ साफ कर फरार हो गए। विद्यालय प्रशासन की सूचना पर मौके पर पुलिस पहुंची और जांच पड़ताल की। बता दें कि बीते एक माह पूर्व मसिका गांव के समीप चक पूरे खुर्द ग्राम सभा के अंतर्गत मियां का पुरा गांव में चोरों ने एक बंद मकान को निशाना बनाते हुए हजारों रुपए नकदी समेत लाखों रुपए के समान व जेवरात पर हाथ साफ कर चुके हैं। रिपोर्ट दर्ज होने के बाद भी पुलिस अब तक चोरी का खुलासा नहीं कर पाई है।

बजरंग दल प्रखंड की बैठक सम्पन्न

शंकरगढ़। विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल प्रखंड की बैठक शंकरगढ़ में आयोजित हुई, जिसमें दल के पदाधिकारियों ने हिंदुत्व की रक्षा के लिये एकता पर जोर दिया।इस मौके पर प्रांत मंत्री प्रेम पांडेय ने कहा कि हम सभी हिंदुओं को एकत्र होना चाहिए, क्योंकि हमें विश्व गुरु बनना है।यमुनापार उपाध्यक्ष मनोज सिंह ने कहा कि हिंदुस्तान की रक्षा के लिये हम सब को एक होना ही पड़ेगा।यमुनापार गौ रक्षक फंटू महाराज ने कहा कि सभी हिंदुओं को अपने घर में एक गोवंश की सेवा करनी चाहिए।वहीं विपिन गुप्ता ने कहा जो भी गौशाला बनी हुई है,उनकी जांच होनी चाहिए जो कमियां हैं उसको दूर करनी चाहिए।इस मौके पर कोषाध्यक्ष कृपाशंकर द्विवेदी, सहसंयोजक सुशील सिंह, संयोजक आदर्श दुबे,प्रखंड मंत्री शिवांशु शुक्ला, सहमंत्री प्रदीप और कार्यवाहक अध्यक्ष मोनू सिंह, राम सिंह कबीर, संरक्षक राजकुमार तिवारी, अध्यक्ष सुजीत केसरवानी, संयोजक प्रकाश चंद गुप्ता, उपाध्यक्ष विनोद विश्वकर्मा आदि पदों की घोषणा की गई।

'कारपोरेट भगाओ-किसानी बचाओ' देश ब्यापी अभियान के तहत निकाली रैली

घूरपुर। कोरोना महामारी लॉकडाउन के दौरान सरकार द्वारा राहत न देने के कारण भूमिहीन व गरीब किसान बड़ी कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। घूरपुर इलाके में मजदूरों ने रैली निकाली। कहा पत्थर खनन मजदूरों के पास काम नहीं है। बालू खनन में गैरकानूनी ढंग से बोट के संचालन पर रोक लगा रखी है। जैसे-जैसे प्रवासी मजदूर वापस घर आए हैं, खेत मजदूरों की मजदूरी दर घट कर आधी रह गयी है। व्यापारी अपने खर्च नहीं निकाल पा रहे हैं। लोग भूखे हैं व बेरोजगार हैं, छात्र व युवा अशांत हैं।

रैली निकालते मजदूर

बड़ी संख्या में भूमिहीन परिवारों की पट्टे की जमीनों पर बड़े जमींदारों व ट्रस्टों ने गैरकानूनी ढंग से कब्जा कर रखा है। जीवित रहने के लिए ये जमीने उन्हें वापस दी जानी जरूरी है।

एआईकेएमएस के नेतृत्व में से सभी सवाल एसडीएम बारा के समक्ष रखे जाएंगे और मांग की जाएगी की बालू खनन में नाव पर लगी रोक हटाई जाए; गांव में सभी लोगों के लिए मनरेगा का काम, जो पिछले 3 मास से पूरी तरह रुका हुआ है, चालू किया जाए; राशन में न्यूनतम जरूरत अनुसार प्रति यूनिट 15 किलो अनाज, 1-1 किलो दाल, तेल व चीनी दिया जाए; माइक्रोफाइनेन्स समेत किसानों के सभी कर्ज के ब्याज माफ किए जाएं व वसूली रोकी जाए; सभी किसानों, छोटे दुकानदारों व घरेलू उपयोगकताओं के कोरोना लॉकडाउन के समय का बिजली का बिल माफ किया जाए; कोरोना हिदायतों के साथ सभी स्कूल खोले जाएं, अस्पताल खोले जाए, गांव में डाक्टर भेजे जाएं। ये विरोध एआईकेएससीसी के आह्वान पर केन्द्र सरकार के 3 अध्यादेश, नया बिजली बिल और डीजल-पेट्रोल के दाम के वृद्धि के विरोध में किया जा रहा है। राष्ट्रपति को ज्ञापन सौंप कर इन सभी कदमों को वापस लेने की मांग की जाएगी। इस बीच लागत के दाम तेजी से बढ़े हैं, जबकि किसानों का मिलने वाला दाम का समर्थन घटा है और बड़े व्यापारी सब्जियों की कम आपूर्ति व ऊँचे दाम लगाकर मुनाफा कमा रहे हैं। ये 3 अध्यादेश, बिजली व डीजल के बढ़े दाम विदेशी कम्पनियों व भारतीय कारपोरेटों को लाभ पहुँचाएंगे। ये कम्पनियां लागत की आपूर्ति, फसलों की किस्म नियंत्रित करेंगी, सरकारी सुरक्षा के आभाव में सस्ते में खरीदेंगी, मंहगा बेचेंगी, खाने का प्रसंस्करण व भंडारण करेंगी, सारी खाद्यान्न श्रृंखला पर कब्जा करेंगी और किसानों की आमदनी तथा लोगों की खाद्यान्न सुरक्षा को समाप्त कर देंगी। किसान मजबूती से महसूस करते हैं कि ये सारे कदम किसानों के साथ धोखाधड़ी हैं और ये विदेशी शोषकों को लाभ पहुँचाएंगे। विदेशी लुटेरों को आमंत्रित करने का आत्मनिर्भरता से कोई लेना देना नहीं है। इलाहाबाद एआईकेएमएस ने इन सवालों पर हरियाणा के किसानों के कल हुए प्रदर्शन पर दमन की कड़ी निन्दा की है। सुरेश, विनोद, दीपचंद्र, देवकली, राजकली, विमला, मंजुसा, रीता, प्रमिला देवी, पंचम देवी, ऊर्मिला देवी, रामरती, पारवती, सुषमा, जगराना, कुषमा देवी, छंगा लाल, मो० नसमी, धमेंद्र, शंकरलाल, अरमान अली अनुज कुमार, श्रवण कुमार, राजमणि, रोहित आदि शामिल रहे।

नाली के निर्माण में धांधली का आरोप

करछना। इन दिनों गौहनिया पचेदवरा मार्ग के बगल नाली का निर्माण कराया जा रहा है जिसमे घटिया सामग्री का प्रयोग किए जाने पर स्थानीय लोगो ने धाधली का आरोप लगाते हुए निर्माण मे घटिया सीमेटएबालू व सरिया आदि का प्रयोग किया जा रहा है।जिसे लेकर गांव निवासी इन्द्र प्रताप सिह ने बताया कि नाली निर्माण का कार्य मे बडे पैमाने पर धाधली की जा रही जिसकी जाच कराकर दोषी ठेकेदार के खिलाफ कार्यवाही की माग की है।लोगो ने बताया कि निर्माण गुणवत्ता का ध्यान न रखने के कारण कई जगह नाली कई जगह छतिग्रस्त हो रही है। जिसे लेकर लोगो मे गहरी नाराजगी है।

प्रयागराज हलचल

संक्षेप समाचार

आज शाम तक खाली हो जाएगा कोल्ड स्टोर

प्रयागरागज। आज शाम तक अतीक का कोल्ड स्टोर खाली करा लिया जाएगा। पूर्व सांसद व माफिया अतीक अहमद की तीन संपत्तियों में से एक पर बना कोल्ड स्टोर को खाली कराया जा रहा है। रविवार की शाम तक इसके पूरी तरह से खाली होने की उम्मीद है। कोल्ड स्टोर को खाली कराने के बाद उस पर कुर्की की नोटिस चस्पा पर आगे की कार्यवाही की जाएगी। इंस्पेक्टर झूंसी नरेंद्र प्रसाद के मुताबिक इसके ध्वस्तीकरण का आदेश आ चुका है। 25 सितंबर तक यह कार्यवाही पूरी कर ली जाएगी। डीएम प्रयागराज ने इन तीनो संपत्तियों का प्रशासक इंस्पेक्टर झूंसी को बनाया है।

पूर्व सांसद अतीक अहमद के मदनानी स्थित भूखंड पर भी पुलिस की हुई कार्यवाही

प्रयागराज। पूर्व बाहुबली सांसद अतीक अहमद पर योगी सरकार की ओर से कार्रवाई जारी है। रविवार को लूकरगंज में मदनानी हॉस्पिटल के पास मुख्य सड़क पर वर्षों से नजूल भूमि को खाली कराने पुलिस प्रशासन की टीम पहुंची। बताया जा रहा है की इस नजूल भूमि पर बाहुबली सांसद अतीक अहमद का अवैध रूप से कब्जा है। अब पुलिस प्रशासन, प्रयागराज विकास प्राधिकरण और नगर निगम की संयुक्त टीम अवैध कब्जे को खाली करा रही है। दरअसल मदनानी अस्पताल के पास लूकरगंज में लगभग 7000 वर्ग मीटर में नजूल भूमि है।

पूर्व सांसद अतीक अहमद का अवैध कब्जा हटाता पीडीए का बुल्डोजर व उपस्थित पुलिस प्रशासन

इस पर चारों तरफ से बाउंड्रीवॉल घेरकर गेट लगवा दिया गया था। भूमि पर बड़ी संख्या में पेड़ और झाड़ियां उग आई हैं। इस पर से कब?जा हटाने के लिए जिला प्रशासन, पुलिस प्रशासन, प्रयागराज विकास प्राधिकरण और नगर निगम की संयुक्त कार्रवाई कर रही है 'भूमि को खाली कराने की कार्रवाई रविवार की सुबह करीब 11 बजे शुरू हुई। कब्जा खाली कराने के बाद सार्वजनिक उपयोग में भूमि लाई जाएगी इस नजूल क्षेत्र में भूमि का कमर्शियल रेट करीब 92 हजार वर्ग मीटर है। इस लिहाज से इस जमीन की कीमत करीब 55 से 60 करोड़ आंकी जा रही है। भूमि को खाली कराए जाने के बाद सार्वजनिक उपयोग के लिए इस्तेमाल किए जाने की बात अधिकारी कह रहे हैं।

जय शिवसेना भारत नवनियुक्त वार्ड अध्यक्षों का मनोनयन एवं अभिनंदन

सम्मानित वार्ड अध्यक्ष

प्रयागराज। जय शिवसेना भारत द्वारा मुट्ठीगंज स्थित बड़े हनुमान मंदिर के प्रांगण में नवनियुक्त वार्ड अध्यक्षों का मनोनयन एवं उनका अभिनंदन संगठन के प्रदेश अध्यक्ष अभिषेक ठाकुर ने किया।

इस अवसर पर उन्होंने सभी वार्ड अध्यक्षों को बधाई देते हुए कहा कि जय शिव सेना भारत का निर्माण भारतीय संस्कृति एवं हिंदुत्व की रक्षा के लिए किया गया है। जिसे हम सब संकल्प लेकर इसके प्रति कार्य करेंगे। इस अवसर पर प्रदेश प्रभारी राजेश केसरवानी, विवेक अग्रवाल, संतोष अग्रहरी, शेष चंद्र शुक्ला ने कहा कि आप सभी जय शिव सैनिक अनुशासन में रहकर संगठन को आगे बढ़ाएंगे। इसके पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अभिषेक ठाकुर ने नवनियुक्त वार्ड अध्यक्षों को प्रशस्ति पत्र देकर एवं माल्यार्पण कर सम्मानित किया। इस अवसर पर वार्ड नंबर 14 से आदित्य श्रीवास्तव, वार्ड 31 से हरिओम केसरवानी, वार्ड 61 से शिव कुमार सोनी, वार्ड 60 से विकास चैरसिया, वार्ड 69 से कृष्णा महतो, वार्ड 66 वासु जायसवाल, वार्ड 78 से संदीप केसरवानी एवं नैनी वार्ड से अतुल शुक्ला सम्मानित किए गए। कार्यक्रम में पंडित घनश्याम पांडे, पंडित शेष चंद्र शुक्ला, विवेक अग्रवाल, संतोष अग्रहरि, बाबू साहनी राकेश जायसवाल, आयुष श्रीवास्तव, अभिलाष केसरवानी, घनश्याम पांडे, अजय अग्रहरि, विजय केसरवानी एवं जय शिव सैनिक उपस्थित रहे।

भाजपा राजनीतिक पार्टी ही नहीं बल्कि समस्त मानव व राष्ट्र का सम्वाहक : त्रयम्बक

प्रयागराज। भाजपा राजनीतिक पार्टी ही नहीं बल्कि सशक्त कार्यकर्ता व सनातनी विचारधारा, भारत का उत्थान, मान सम्मान के साथ समस्त मानव और राष्ट्र का सम्वाहक है। इसके मृत्यूंजयी विचार धारा व पंडित दीनदयाल उपाध्याय का लक्ष्य था समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति तक विकास पहुंचें। इसके लिए भाजपा कार्यकताओं ने गांव-गावं पहुंचकर राष्ट्र को परम वैभव तक पहुंचाने का कार्य किया। आज पूरे विश्व मे मोदीजी के नेतृत्व में भारत विकास की गाथा लिखी जा रही है। यह बातें रविवार सायं यमुनापार मेजा विधानसभा सेक्टर प्रभारी संयोजक वर्चुअल प्रशिक्षण बैठक में मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश भाजपा के मंत्री त्रयम्बक नाथ त्रिपाठी ने कार्यकताओं को सम्बोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि चारों तरफ भारत माता के जयकारे और बन्दे मातरम् की गूंज सुनाई पड़ती है। पार्टी के रीति-नीति से कार्यकताओं को अवगत करते हुए प्रशिक्षित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ उपाध्यक्ष शोभ नारायण द्विवेदी ने किया। कार्यक्रम में विधायक मेजा नीलम करवरिया के प्रतिनिधि मौजूद रहे। जिला महामंत्री कार्यक्रम संयोजक रामेश्वर पटेल ने मोदीजी के जन्मदिवस को सेवा दिवस के रूप मे मनाने को कहा। संचालन जिला महामंत्री विक्रमादित्य मौर्य ने व आभार इजी. जगदीश सिंह यादव ने किया।

चोरी की ट्रक का फर्जी दस्तावेज तैयार कर बेचने के फिराक में थे, चढ़ गए पुलिस के हत्थे

पुलिस की गिरफ्त में आरोपी

प्रयागराज। रविवार को प्रयागराज पुलिस के हत्थे चढ़ गए पांच शातिर चोर। शातिर चोरों का गिरोह पहले हाईवे पर ट्रक लूटते थे, इसके पश्चात फर्जी तरीके से लूटी हुई ट्रक का कागजात तैयार तैयार करते थे फिर उसको अन्य जनपदों में बेच देते थे ' ऐसा ही गिरोह का पदार्फाश रविवार को प्रयागराज पुलिस ने किया है। पांच शातिर चोर उस वक्त पुलिस के हत्थे चढ़ गए। जब वह अपने कारनामों के अंतिम पड़ाव पर पहुंच गए थे। चोरी की ट्रक बेचने ही वाले थे पुलिस ने पांचों को धर दबोचा। जानकारी के अनुसार प्रयागराज पुलिस को मुखबिर से काफी दिनों से खबर मिल रही थी कि प्रयागराज में शातिर चोरों का एक गिरोह हाईवे पर ट्रक लूटता है इसके पश्चात वह फर्जी कागजात तैयार कर बाहर के जिलों में बेच देता है। इस मामले में पुलिस अपना नजर जमाई हुई थी तभी रविवार को कीडगंज पुलिस को सूचना मिली कि परेड मैदान के पास कुछ लोग चोरी की ट्रक का फर्जी कागजात बनाकर दूसरे को बेचने के फिराक में है। सूचना मिलते ही कीडगंज पुलिस सक्रिय हो गई मौके पर पहुंचकर चारों ओर से घेराबंदी कर फर्जी तरीके से ट्रक बेच रहे पांच लोगों को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस पूछताछ में युवकों ने अपना नाम और पता अब्दुल वाहिद शाहगंज, सहवान सोरांव, समशेर सोरांव, नदीम नवाबगंज, संतोष द्विवेदी धूमनगंज के रहने वाले बताया। पुलिस ने बताया है कि लोगों के खिलाफ प्रयागराज के विभिन्न थानों में भी कई मुकदमे दर्ज है।

शहरी क्षेत्र में शिक्षकों की कमी शीघ्र होगी दूर : विजय किरन आनंद

नयी शिक्षा नीति से होगा व्यापक सुधार

दिव्य कुंभ भव्य कुंभ के प्रचार प्रसार की सराहना की

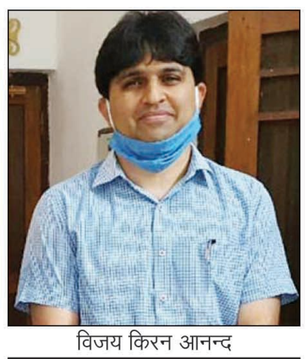

विजय किरन आनन्द

प्रयागराज। बेसिक शिक्षा के महानिदेशक विजय किरन आनंद रविवार को प्रयागराज में थे। वह कुंभ मेला प्राधिकरण की बैठक में शामिल होने के लिये आये थे।

उन्होंने कहा कि शहरी क्षेत्र में शिक्षकों की जो कमी है वह शीघ्र दूर होगी। क्योंकि नयी शिक्षा नीति के लागू होने से शिक्षण से लेकर व्यवस्था तक में व्यापक सुधार होगा। उन्होंने कहा कि बेसिक शिक्षा के शहरी क्षेत्र के स्कूलों में शिक्षकों की बड़े पैमाने पर कमी है जबकि ग्रामीण क्षेत्र के स्कूलों में शिक्षक-शिक्षिकाओं की उतनी कमी नहीं है। प्रयागराज और लखनऊ जैसे बड़े शहरों में शिक्षण करने वाले शिक्षकों की पदोन्नति नहीं हुई है इससे भी असर पड़ा है। महानिदेशक बेसिक शिक्षा उप्र लखनऊ ने कहा कि बेसिक शिक्षा के स्कूलों में छात्र-छात्राओं की संख्या बढ़ी है और शिक्षण में भी व्यापक सुधार हुआ है। शिक्षक- शिक्षिकाएं समय से स्कूल पहुंचकर शिक्षण कर रहे हैं। बड़ी संख्या में जो शिक्षक-शिक्षिकाएं कहीं न कहीं अर्थात डायट, बीआरसी सहित अन्य स्थानों पर अटैच थे, उनको वहां से हटाकर स्कूल भेज दिया गया है। इससे भी शिक्षकों की संख्या में वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में शिक्षकों को सिर्फ शिक्षण तक रखा जायेगा और उनसे कोई भी बाहरी या दूसरे विभाग का काम नहीं लिया जायेगा।

बेसिक शिक्षा महानिदेशक विजय किरन आनंद ने कहा कि आने वाले समय में मिड डे मील का काम स्कूल के शिक्षकों को करना पड़ता है उसको भी हटाया जायेगा। लखनऊ और मथुरा की तरह किसी संस्था को यह काम सौपा जायेगा जिससे कि शिक्षक - शिक्षिकाएं परेशान न हो बल्कि वह सिर्फ शिक्षण कार्य पर जोर दें। इस दौरान वरिष्ठ शिक्षिक नेता डॉ शैलेश कुमार पाण्डेय ने बेसिक शिक्षा में बेहतर शिक्षण, शिक्षण का माहौल बनाने, शिक्षकों की कमी दूर करने, स्कूल में मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करने पर अपने सुझाव दिये।

विजय किरन आनंद ने प्रयागराज की संस्था हरिश्याम मानव कल्याण शिक्षा एवं शोध संस्थान के सचिव राजीव कुमार मिश्रा, संस्था की वरिष्ठ उप प्रबंधक श्रीमती अमिता मिश्रा द्वारा कुंभ 2019 के फोटोग्राफ को एलईडी पर दिखाने एवं समाचार पत्रों के माध्यम से कुंभ के भव्य आयोजन के प्रचार प्रसार की प्रशंसा किया। कहा कि तीर्थराज प्रयाग में दिव्य कुंभ भव्य कुंभ के विशाल आयोजन की विश्व स्तर पर प्रशंसा हुई। इसको सकुशल संपन्न कराने में सभी का योगदान था। पीएम नरेन्द्र मोदी जी और प्रदेश के सीएम योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में यह विश्व स्तरीय आयोजन संपन्न हुआ है। ऐसे में तीर्थराज प्रयाग के सभी लोग बधाई के पात्र है। संस्था के सचिव राजीव कुमार मिश्रा ने बताया कि दिव्य कुंभ भव्य कुंभ प्रदर्शनी एवं एलईडी पर प्रदर्शन हरिद्वार कुंभ, उज्जैन कुंभ सहित देश के सभी ट्रिपलआईटी, एमएनआईटी सहित अन्य संस्थाओं में 2025 तक जारी रहेगा।

सीडब्लूसी सदस्य बनाए जाने पर प्रमोद का भव्य स्वागत

प्रयागराज। पूर्व राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी को कांग्रेस वर्किंग कमेटी में स्थाई सदस्य मनोनीत किए जाने पर बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता बधाई देने के लिए लालगंज स्थित कैंप कार्यालय पहुंच गए। यहां पर मौजूद कांग्रेस के वरिष्ठ नेता प्रमोद तिवारी को 51 किलो की माला पहनाने के साथ ही शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। सभी ने एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर खुशी बांटी। इस मौके पर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पं. श्याम किशोर शुक्ल ने कहा कि प्रमोद तिवारी प्रयागराज मंडल से ऐसे पहले नेता हैं, जिन्हें कांग्रेस वर्किंग कमेटी में स्थाई सदस्य के रूप में मनोनीत किया गया है। वहीं अन्य कांग्रेस कार्यकताओं ने भी इसे ऐतिहासिक पल बताते हुए कहा कि प्रतापगढ़ के गौरवशाली इतिहास में यह स्वर्णिम अध्याय जुड़ गया। वहीं विधानमंडल दल की नेता एवं विधायक आराधना मिश्रा मोना ने भी अपने पिता प्रमोद तिवारी को वर्किंग कमेटी का सदस्य मनोनीत किये जाने पर बधाई दी।

जर्जर तारों के सहारे की जा रही बिजली आपूर्ति

करछना। तहसील क्षेत्र के भुंडा, घोड़ेडीह, झीरी लच्छीपुर, अरई, करछना सहित पांच विद्युत उपकेन्द्रो से जुड़े गांवों में जर्जर तारों के सहारे बिजली सप्लाई की जा रही है। जो हल्का से हवा.पानी में ही टूटकर गिर जाते है जिससे जहां लाइट की सप्लाई बाधित हो जाती है वहीं सड़क से गुजरने वाले राहगीर भी कई बार दुर्घटना के शिकार हो जाते है। करीब तीन दशक पूर्व विद्युतीकरण किया गया था उसके बाद से तार टूटने पर रिपेयर कर दिया जाता रहा है लेकिन अब तारों की स्थिति यह हो गयी है कि तार काम लेकिन तारों पर रिपेयरिंग और जर्जरता ज्यादा झलकती है। साधूकुटी, बेलाचौराहा, करछना, पचदेवरा मार्ग पर जमीन से मात्र 7 फिट की दूरी पर लटकते हुए तार दिखाई पड़ जायेगे जिससे वाहने के आने जाने से छू जाने से दुर्घटना होने का भय बना रहता है। गनीमत तो यह है कि ज्यादा बिजली कटौती होने के कारण इन तारों ने वाहनों के छू जाने पर भी कोई हताहत नही होता है। करछना तहसील मुख्यालय होने की वजह से कई दर्जन भर सरकारी, गैर सरकारी कार्यालय व बैंकिग संस्थान होने से लोड अधिक रहता है और ऐसे में इन जर्जर तारों से सप्लाई होने से तार गरम होकर टूट जाते है जिससे बिजली व्यवधान उत्पन्न हो जाता है। लोगो ने समस्या के जल्द निराकरण कराये जाने की मांग की है।

राष्ट्रवाद हम सब की प्रेरणा और शक्ति : मीना चौबे

प्रयागराज। कार्यकर्ता निर्माण हेतु सशक्त टोली का गठन होना चाहिए। राष्ट्रवाद हमारी प्रेरणा और शक्ति है। सभी को साथ मिलकर कार्य करना और सहयोग लेना चाहिए। कार्यकताओं को जोड़ने हेतु सेतू का कार्य करना चाहिए। उक्त बातें मुख्य अतिथि भाजपा उत्तर प्रदेश की मंत्री मीना चैबे ने रविवार को कोरांव विधानसभा के सेक्टर प्रभारी-संयोजक वर्चुअल प्रशिक्षण बैठक में कार्यकताओं से कही। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण कुछ ना कुछ नया सीखने का क्रम है। कार्यकर्ता जब सेवा भाव से मिलकर सेवा के साथ संगठन व राष्ट्र के लिए समर्पित होकर कार्य करता है तो विश्व मे कीर्तिमान यश की स्थापना होती है और देश विकास की ओर अग्रसर हो जाता है। कहा कि इसी क्रम में मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री दिन रात ऐतिहासिक फैसले लेकर राष्ट्र सेवा कर रहे हैं। विधायक कोरांव राजमणि कोल ने मुख्य अतिथि की बातों का अनुसरण करने के साथ कोरांव को अग्रिम पंक्ति में रहने का भरोसा दिलाया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष विभवनाथ भारती के लखनऊ भर्ती होने के कारण वरिष्ठ उपाध्यक्ष शोभनारायण द्विवेदी व संचालन जिला महामंत्री रामेश्वर पटेल ने करते हुए मोदीजी के जन्मदिवस को सेवा दिवस में मनाने को कहा। आभार जिला उपाध्यक्ष राजेश्वरी तिवारी ने व्यक्त किया। इस अवसर पर अजीत प्रताप सिंह, विक्रमादित्य मौर्य, दिलीप कुमार चतुर्वेदी, शिवदत्त पटेल, अशोक चैधरी, मनोज गुप्ता, विशाल मोहन, संजय कुमार पटेल, गोबिंद प्रसाद मिश्र, श्यामबाबू केसरवानी, राकेश पाण्डेय, जगदीश यादव आदि जिला पदाधिकारी, मंडल अध्यक्ष के साथ मंडल प्रभारी, सेक्टर प्रभारी-संयोजक आदि भारी संख्या में उपस्थिति रहे। उक्त जानकारी भाजपा जिला मीडिया प्रभारी यमुनापार दिलीप कुमार चतुर्वेदी ने दी।

कोरोना मरीजों को तनावमुक्त रखने को काउसिंलिंग

प्रयागराज। कोरोना मरीजों को तनावमुक्त व मानसिक रूप से सेहतमंद रखने की कवायद शुरू हो गई है। मोतीलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज ऑनलाइन काउसिंलिंग करेगा। काउंसिलिंग के दौरान तनाव को दूर भगाने, कोरोना को लेकर बनी चिंता व स्वस्थ होकर आगे बढ़ने के बारे में बताया जाएगा। मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डा. एसपी सिंह के अनुसार, कोरोना होने के बाद संबंधित व्यक्ति में कई तरह की नकारात्मक सोच बनने लगती है। मरीज यह सोचने लगता है कि अब वह दोबारा पहले जैसा जीवन नहीं जी सकेगा।

अखण्ड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम कियायोग आश्रम एवं अनुसंधान सस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम

पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं0: UPHIN2001/9025

राशन वितरण में मनमानी करने वालों की दुकान होगी निरस्त

प्रयागराज। राशन वितरण में मनमानी करने वाले कोटेदारों के खिलाफ खाद एवं रसद विभाग अब सख्त हो गया है। राशन कार्डधारकों और आपूर्ति निरीक्षकों की एक शिकायत पर कोटा निरस्त हो जाएगा। राशन वितरण में मनमानी करने के कारण जिले में अब तक 30 से अधिक कोटेदारों पर मुकदमा दर्ज कराया जा चुका है। वहीं 34 दुकानें निरस्त भी की जा चुकी हैं। प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत मुफ्त में वितरित किए जाने वाले राशन में मनमानी की शिकायत जिला आपूर्ति अधिकारी के पास अधिक पहुंच रही है। जिला आपूर्ति अधिकारी दिलीप कुमार ने बताया कि अप्रैल से प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना शुरू की गई। योजना समस्त राशन कार्डधारकों को मुफ्त में चना, चावल वितरित किया जाता है, लेकिन कई कोटेदार मनमानी करते हुए न तो समय से राशन वितरित कर रहे हैं और न ही दुकान खोल रहे हैं। ऐसे में कार्ड धारकों को राशन के लिए परेशान होना पड़ रहा है, जिसको ध्यान में रखते हुए स्पेशल टीम बनाकर मनमानी करने वाले कोटेदारों के खिलाफ जांच कराकर कार्रवाई की जाएगी।

जो सरकार किसानों, जवानों पर लाठियां बरसाए उस सरकार को उखाड़ फेंकने की जरूरत : नरेंद्र सिंह

लोगों को डिजिटल पत्र बांटते सपा नेता नरेन्द्र सिंह

प्रयागराज। प्रदेश की हालत बद से बदतर होती जा रही है। आम जनमानस कोरोना महामारी से परेशान है। कितनों का रोजगार समाप्त हो चला है, रोजी रोटी की संकट आ गया है 'वही प्रदेश की सरकार किसानों और जवानों तथा बेरोजगारों पर लाठियां बरसा रही है। जो सरकार बेरोजगारों को रोजी-रोटी न दे सके, उसे सत्ता मे रहने का कोई औचित्य नहीं है। काफी संख्या में नौजवान सड़कों पर उतर कर सरकार से अपनी बात कहना चाह रहे हैं तो उनको जेल भेज दिया जा रहा है। उक्त बातें सपा के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व प्रदेश सचिव नरेन्द्र सिंह अपने नेता अखिलेश यादव जी द्वारा जारी डिजिटल पत्र को छपवा कर क्षेत्र के सभी वर्गों मे वितरण करते हुए कहा है।

कई दिनों से लगातार समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता नरेंद्र सिंह गांव-गांव घूम घूम कर समाजवादी पार्टी के ओर से डिजिटल पत्रक बांट बांट कर युवाओं नौजवानों किसानों बुद्धिजीवियों में जोश भरने का काम कर रहे हैं। क्षेत्रों में इनको काफी समर्थन भी मिल रहा है। पत्रक वितरण के क्रम मे रविवार को नरेन्द्र सिंह ने मेजा (उरूवा) क्षेत्र के कई बुद्धि जीवियों, प्रधानों, बीडीसी सदस्यों, सामाजिक कार्यकताओं, तथा युवाओं से मिलकर प्रदेश में अखिलेश यादव के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी की सरकार बनाने के लिए ह्नअगस्त क्रांति की समाजवादी दिशाह्न पत्रक सौंपकर तथा लाल टोपी पहना कर सपा के समर्थन की अपील की। मेजा उरूवा क्षेत्र के चपौर, ओनौर, कनिगड़ा, परवा, कुंवर पट्टी, जेवनिया सहित विभिन्न गाँवों मे भ्रमण करके पत्रक बांट कर 2022 मे समाजवादी पार्टी की सरकार बनाने के लिए सहयोग की अपील की।

सपा नेता नरेन्द्र सिंह ने कहा कि देश की विविधता को नष्ट करने की साजिशों के दौर में संवैधानिक मूल्यों को बचाने तथा हर नागरिक का समृद्धि और सुरक्षित जीवन सुनिश्चित करने के लिए सपा कटिबद्ध है। श्री सिंह ने कहा कि भाजपा शासन में आम आदमी को निराश और हताश होना पड़ा है। तमाम वादे कर सत्ता में आने के बाद भाजपा देश में पूंजीवाद को बढ़ावा दे कर, देश की आर्थिक और सामाजिक दशा को तहस-नहस कर रही है। उन्होने सर्व कल्याण के लिए समाजवाद को ही सही रास्ता सुझाया है। ज्ञात हो कि राष्ट्रीय अध्यक्ष के निर्देश पर सपा नेता नरेंद्र सिंह द्वारा डिजिटल पत्र की हजारों प्रतियां छपवाई गई हैं जिनका वितरण पूरे जनपद में किया जा रहा है। इस मौके पर सर्व रविकांत मिश्रा पूर्व प्रधान, ओमप्रकाश द्विवेदी, प्रेम चंद यादव, रमाशंकर मिश्र, जय प्रकाश उपाध्याय, ब्रह्म देव उपाध्याय, पवन द्विवेदी, आशीष गौड़, रिंकू द्विवेदी, हर्षित मिश्रा, हिमांशु कुमार सिंह, रजत तिवारी, बल्ली बिन्द, कपिल यादव, कलक्टर पटेल, काशी प्रसाद यादव, सर्वेश कुमार सिंह, चन्द्र कान्त तिवारी उर्फ. कूटर, आशीष कुमार मिश्र, अंकित पाण्डेय, चन्दन यादव, अजय गौड़, अंकित गुप्ता, अजय निषाद, उमाशंकर यादव, राजेश निषाद, आदर्श सिंह, मनोज तिवारी, विभव पाण्डेय, मुन्नू गौतम, सूर्य मणि, बेचन लाल गौड़, कृष्ण कुमार मिश्र, गोविन्द मिश्र, शिव मोहन मिश्रा, डाक्टर महेन्द्र सिंह, रामनाथ विश्वकर्मा, डाक्टर गुलबहार, शिव नाथ विश्वकर्मा, विनय मिश्र, रजनीश मिश्र, मोहम्मद शब्बीर, दिनेश गुप्ता, शिव मोहन मिश्रा, श्याम लाल यादव आदि रहे।

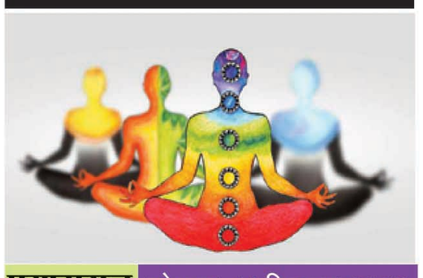

प्रयागराज सोमवार, 14 सितम्बर, 2020

क्रियायोग सन्देश

महाभारत : सत्य व अहिंसा का मार्ग

अणु-परमाणु परमात्मा का सिंहासन

अणु-परमाणु माया का रूप है और यह रूप परमात्मा से प्रकट हुआ है। परमात्मा स्वयं माया के रूप में प्रकट होकर माया को सिंहासन के रूप में प्रयोग करते हैं। परमाणु (AwnL) में सतत् ध्यान केन्द्रित करने पर परमात्मा (रचनाकार) की उपस्थिति अनुभव होती है। मनुष्य के लिए अणु-परमाणुओं का निकटतम् समूह उसका स्वयं का दृश्य रूप है जिसे शरीर कहते हैं। शरीर में मन को केन्द्रित करने पर जब शरीर और मन के बीच दूरी शून्य हो जाती है तो शरीर के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान होता है कि अदृश्य परमात्मा स्वयं शरीर के रूप में प्रकट हो रहे हैं। जिस शरीर को हम हाड़-माँस कहते हैं वह सर्वज्ञ-सर्वशक्तिमान-अमरतत्व है जिसका कभी विनाश नहीं होता है, केवल रूप बदलता है। जिस प्रकार अण्डे के अंदर जीव-जन्तु व बीज में पेड़ छिपा होता है उसी तरह अदृश्य जगत में शरीर का दृश्य रूप छिपा रहता है। क्रियायोग विज्ञान को पूर्ण रूप में बोले व लिखे गये शब्दों अथवा चित्र के माध्यम से समझना व समझाना संभव नहीं है। इसे ठीक तरह समझने के लिए क्रियायोग ध्यान का अभ्यास आवश्यक है। क्रियायोग ध्यान में निर्विकल्प समाधि लगने पर मेडुला में कूटस्थ का दर्शन होता है जो परमात्मा का स्वरूप है। इस ज्ञान की अनुभूति होने पर मनुष्य जब तक चाहे तब तक शरीर के दृश्य रूप को बनाये रख सकता है।

धृतराष्ट्र उवाचः ''धृतराष्ट्र उवाच'' क्रियायोग का प्रारम्भिक अभ्यास है। जैसे-जैसे इस अभ्यास की गहराई में उतरते हैं वैसे-वैस गीता का एक-एक अध्याय हमारे अंदर प्रकट होने लगता है। धृतराष्ट्र उवाच के अभ्यास से अन्तःकरण में गीता के अट्ठारह अध्याय प्रकाशित हो जाते हैं। अंधा मन धृतराष्ट्र के रूप में है। जब शरीर राष्ट्र पर अंधेमन का शासन होता है तब शरीर में उसी प्रकार से अव्यवस्था होने लगती है जैसे धृतराष्ट्र के द्वारा हस्तिनापुर में अव्यवस्था हुई थी।

मन इन्द्रियों के सहारे ही विषयों का भोग करता है। बिना इन्द्रियों के मन शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध की अनुभूति नहीं कर सकता है इसीलिए मन को अंधा कहा जाता है। अंधा मन हमेशा द्वन्द की अनुभूति करता है। इस कारण मन हमेशा सीमित अनुभूति में रहता है। वह सोचता है कि उसके पास शक्ति, ज्ञान, शांति सब कुछ कम है। इस कारण मन डरा-डरा रहता है और अनेक प्रकार की गल्तियाँ करता है।

''उवाच'' का अभ्यास क्रियायोग का अभ्यास है। जैसे-जैसे उवाच का अभ्यास गहरा होता जाता है वैसे-वैसे मन का अंधापन दूर होने लगता है। ''उवाच'' को समझने के लिए ''उवाच'' शब्द में छिपे हुए ज्ञान का प्रारम्भिक बोध आवश्यक है। 'उ' और 'वाच' से मिलकर उवाच बना है। 'उ' उर्ध्व दिशा का संबोधन है तथा 'वाच' कार्य-अभिव्यक्ति को संबोधित करता है। चित्र में मेडुला के अंदर स्थित कूटस्थ केन्द्र को उच्चतम बिन्दु कहा गया है। क्रियायोग के अभ्यास से पूरे शरीर की जीवन शक्ति सिर व रीढ़ की ओर प्रवाहित होकर मेडुला की ओर केन्द्रित होने को उर्ध्व दिशा में यात्रा कहते हैं। इसे ही स्वर्गारोहण भी कहते हैं। प्राण शक्ति को उर्ध्व दिशा की ओर उन्मुख करके सभी प्रकार के कार्यों का सम्पादन ही ''उवाच'' अभ्यास है। इस अभ्यास से मन का अंधापन दूर होने लगता है। क्रियायोग ध्यान को सुनकर या पढ़कर नहीं समझा जा सकता है। इसको समझने के लिए क्रियायोग का नियमित ध्यान करना पड़ता है। सुने गये या लिखे गये शब्दों के अंदर छिपे हुए सत्य को बिना क्रियायोग ध्यान के जानने में सैकड़ों वर्ष लग जाते हैं।

Mahabharat :

A Path of Truth & Non-violence

Atom Is The Throne Of Creator (God).

An atom represents maya which is projected out of Creator and is the throne of Creator. By placing the mind on atoms more and more, we realize the presence of Creator. The nearest of near existence of atoms is our own body. Kriyayoga practice is the art of concentration on our own body with the concept that this body structure came out of God like a bird does comes out of an egg or a tree grew out of a seed. Spoken or written words cannot explain Kriyayoga Science precisely. We need to actually practice the technique of Kriyayoga meditation to gain an understanding of these concepts. practice. In Nirvikalpa samadhi, we realize that the Kingdom of God exists within our own body where we find the throne (medulla - nucleus) of the Creator. The moment we experience this, we are able to hold the body until we decide and also we are able to convert this body into any form we need.

DhritaraashtraUvaacha is the beginning of Kriyayoga practice.As our practice goes deeper and deeper, we experience the opening of Truth hidden in the various chapters of Gita. In practicing Dhritaraashtra Uvaach, we experience the knowledge packed in all the eighteen chapters of Shrimad Bhagavad Gita. When the body is ruled and governed by the blind mind, it undergoes various disorders in the form of countless physical illnesses and mental stress. We can compare this with the disorder created by Dhritaraashtra. in Hastinapur

Dhritaraashtra represents blind mind and is the King of the human body kingdom. As the mind needs the essential help of sense organs to experience objects of various dimensions, it is known as blind mind. Because of this, the blind mind is not able to experience freedom. Whenever the blind mind, as a King, rules the body kingdom, then the

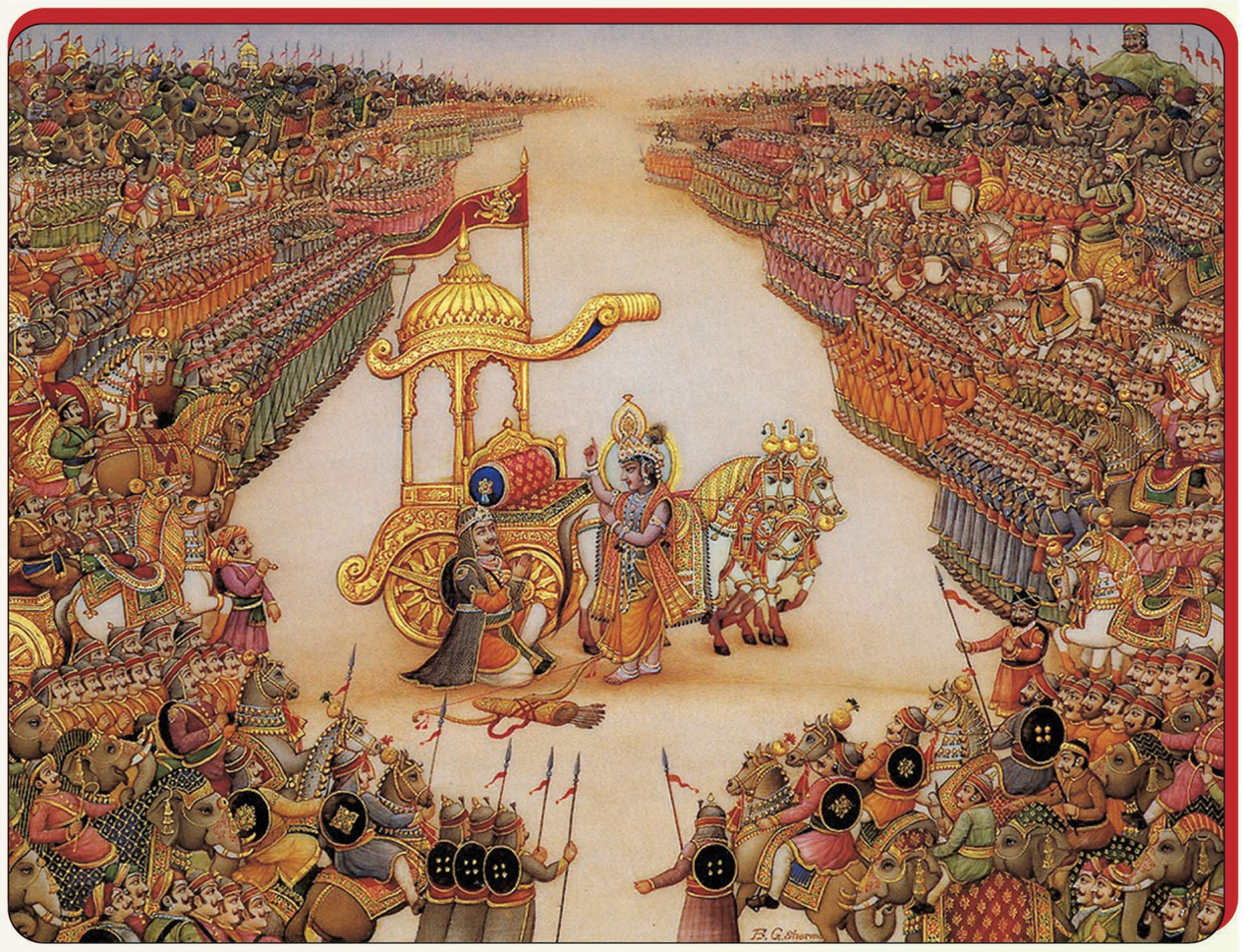

person has a totally materialistic life and lives a life of attachment and aversion on the platform of sense perceptions. In this state, a person commits all sorts of mistakes in all dimensions of life.

Uvaacha is the practice of Kriyayoga meditation to remove blindness of mind. Uvaacha is comprised of "u" and "vaacha" . "U" represents the upper most point within the body which is known as the kuthasthacenter within the medulla. **See the diagram on the previous page.** "Vaacha" represents all activities performed by a person while placing concentration of mind on the Kuthastha center present in the medulla. Dhritaraashtra Uvaacha steps are known as the recharging technique of Kriyayoga meditation. In the present time, recharging can be learnt correctly and easily through face-to-face practice with a Realized Master. Any person who is very devoted to Kriyayoga Science can learn it through printed lessons and guided instructions. However, one should remember that through printed lessons and guided instructions, it may take a long time to experience the Truth hidden within words and sentences.